Bhadrakali Stutih

भद्रकालीस्तुतिः

Document Information

Text title : bhadrakAlIstutiH

File name : bhadrakAlIstutiH.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, aShTaka, devI

Location : doc_devii

Proofread by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Description/comments : from devIstotraratnAkara

Latest update : December 5, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 22, 2022

sanskritdocuments.org

भद्रकालीस्तुतिः

ब्रह्मविष्णु ऊचतुः -
नमामि त्वां विश्वकर्त्रीं परेशीं
नित्यामाद्यां सत्यविज्ञानरूपाम् ।
वाचातीतां निर्गुणां चातिसूक्ष्मां
ज्ञानातीतां शुद्धविज्ञानगम्याम् ॥ १॥

पूर्णां शुद्धां विश्वरूपां सुरूपां
देवीं वन्द्यां विश्ववन्द्यामपि त्वाम् ।
सर्वान्तःस्थामुत्तमस्थानसंस्था-
मीडे कालीं विश्वसम्पालयित्रीम् ॥ २॥

मायातीतां मायिनीं वापि मायां
भीमां श्यामां भीमनेत्रां सुरेशीम् ।
विद्यां सिद्धां सर्वभूताशयस्था-
मीडे कालीं विश्वसंहारकर्त्रीम् ॥ ३॥

नो ते रूपं वेत्ति शीलं न धाम
नो वा ध्यानं नापि मन्त्रं महेशि ।
सत्तारूपे त्वां प्रपद्ये शरण्ये
विश्वाराध्ये सर्वलोकैकहेतुम् ॥ ४॥

द्यौस्ते शीर्षं नाभिदेशो नभश्च
चक्षूंषि ते चन्द्रसूर्यानलास्ते ।
उन्मेषास्ते सुप्रबोधो दिवा च
रात्रिर्मातश्चक्षुषोस्ते निमेषम् ॥ ५॥

वाक्यं देवा भूमिरेषा नितम्बं
पादौ गुल्फं जानुजङ्घस्त्वधस्ते ।
प्रीतिर्धर्मोऽधर्मकार्यं हि कोपः

सृष्टिर्बोधः संहृतिस्ते तु निद्रा ॥ ६॥

अग्निर्जिह्वा ब्राह्मणास्ते मुखाब्जं
सन्ध्ये द्वे ते भ्रूयुगं विश्वमूर्तिः ।
श्वासो वायुर्बाहवो लोकपालाः
क्रीडा सृष्टिः संस्थितिः संहृतिस्ते ॥ ७॥

एवम्भूतां देवि विश्वात्मिकां त्वां
कालीं वन्दे ब्रह्मविद्यास्वरूपाम् ।
मातः पूर्णे ब्रह्मविज्ञानगम्ये
दुर्गेऽपारे साररूपे प्रसीद ॥ ८॥
इति श्रीमहाभागवते महापुराणे ब्रह्मविष्णुकृता भद्रकालीस्तुतिः सम्पूर्णा ।

हिन्दी भावार्थ -
ब्रह्मा और विष्णु बोले–सर्वसृष्टिकारिणी, परमेश्वरी, सत्यविज्ञान- रूपा, नित्या, आद्याशक्ति ! आपको हम प्रणाम करते हैं । आप वाणीसे परे हैं, निर्गुण और अति सूक्ष्म हैं, ज्ञानसे परे और शुद्ध विज्ञान से प्राप्य हैं ॥ १॥
आप पूर्णा, शुद्धा, विश्वरूपा, सुरूपा वन्दनीया तथा विश्ववन्द्या हैं । आप सबके अन्तःकरणमें वास करती हैं एवं सारे संसारका पालन करती हैं । दिव्य स्थाननिवासिनी आप भगवती महाकालीको हमारा प्रणाम है ॥ २॥
महामायास्वरूपा आप मायामयी तथा मायासे अतीत हैं, आप भीषण, श्यामवर्णवाली, भयंकर नेत्रोंवाली परमेश्वरी हैं ।
आप सिद्धियों से सम्पन्न, विद्यास्वरूपा, समस्त प्राणियोंके हृदयप्रदेशमें निवास करनेवाली तथा सृष्टिका संहार करनेवाली हैं, आप महाकाली को हमारा नमस्कार है ॥ ३॥
महेश्वरी ! हम आपके रूप, शील, दिव्य धाम, ध्यान अथवा मन्त्रको नहीं जानते । शरण्ये ! विश्वाराध्ये! हम सारी सृष्टिकी कारणभूता और सत्तास्वरूपा आपकी शरण में हैं ॥ ४॥
मातः ! द्युलोक आपक सिर है, नभोमण्डल आपका नाभिप्रदेश है । चन्द्र, सूर्य और अग्नि आपके त्रिनेत्र हैं, आपका जगना ही सृष्टि के लिये दिन और जागरण का हेतु है और आपका आँखें मूँद लेना ही सृष्टिके लिये रात्रि है ॥ ५॥

देवता आपकी वाणि हैं, यह पृथ्वी आपका नितम्बप्रदेश तथा पाताल आदि नीचे के भाग आपके जङ्घा, जानु, गुल्फ और चरण हैं । धर्म आपकी प्रसन्नता और अधर्मकार्य आपके कोपके लिये है । आपका जागारण ही इस संसारकी सृष्टि है और आपकी निद्रा ही इसका प्रलय है ॥ ६॥

अग्नि आपकी जिह्वा है, ब्राह्मण आपके मुखकमल हैं । दोनों सन्ध्याएँ आपकी दोनों भ्रूकुटियाँ हैं, आप विश्वरूपा हैं, वायु आपका श्वास है, लोकपाल आपके बाहु हैं और इस संसारकी सृष्टि, स्थिति तथा संहार आपकी लीला है ॥ ७॥

पूर्ण! ऐसी सर्वस्वरूपा आप महाकालीको हमारा प्रणाम है । आप ब्रह्मविद्यास्वरूपा हैं । ब्रह्मविज्ञानसे ही आपकी प्राप्ति सम्भव है । सर्वसाररूपा, अनन्तस्वरूपिणी माता दुर्गे! आप हमपर प्रसन्न होम् ॥ ८॥

इस प्रकार श्रीमहाभागवतपुराण के अन्तर्गत ब्रह्मा और विष्णुद्वारा की गयी भद्रकालीस्तुति सम्पूर्ण हुई ।

Proofread by Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Bhadrakali Stutih

pdf was typeset on November 22, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*